d{kk 10

jktLFkku dk bfrgkl ,oa laL—fr

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

d{kk 10
jktLFkku dk bfrgkl ,oa laL—fr

jkt LFkku dk bfrgkl ,oa laL—fr

d{kk&10

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

jktLFkku dk bfrgkl ,oa laL—fr

d{kk&10

संयोजक

प्रोफेसर बी. एम. शर्मा

पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

लेखकगण

डॉ. कमलनयन शल्य

प्राचार्य, कॉलेज शिक्षा, राजस्थान

प्लॉट नं.–51. मधुबन पश्चिम किसान मार्ग,

टोंक रोड, जयपुर

पवन भंवरिया

सहायक आचार्य, इतिहास

राजकीय महाविद्यालय, सुजानगढ़

चित्रा राव

सहायक आचार्य, इतिहास

राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर

प्राक्कथन

राजस्थान का सांस्कृतिक वैविध्य इस प्रदेश की विशिष्टता है। यहाँ के विभिन्न क्षेत्रों की भौगोलिक विशिष्टताओं, समय–समय पर आकर यहाँ बसने वाली जातियों एवं स्थानीय प्रतिभा ने प्रदेश को इस विपुल सांस्कृतिक वैविध्य से समृद्ध किया है। राजस्थान में मानव इतिहास प्रस्तर एवं धातु युगों से सैन्धव कालीन कालीबंगा, आहड़, गिलुण्ड, बागोर, गणेश्वर आदि संस्कृतियों से लेकर वैदिक कालीन संस्कृति कतिपय जनपदों के युगों से होते हुए निरंतर राजपूत काल तक चला आया है। मध्यकाल में, यहाँ अनेक राजपूत रियासतों, रजवाड़ों की स्थापना हुई। तदुपरांत यह प्रदेश यहाँ के रजवाड़ों रियासतों के प्रदेश के नाम से प्रथित हुआ।

इन्हीं रियासतों में एक ओर शासकों के संरक्षण में साहित्य और विविध कलाओं की शास्त्रीय परम्पराओं की स्थापना हुई और विकास हुआ वहीं दूसरी ओर लोक के संरक्षण में लोक कलाओं और लोक साहित्य फला फूला। इस प्रकार राजस्थान ने जहां एक ओर महाराजा कुम्भा व सवाई जयसिंह जैसे विभिन्न विधाओं व कलाओं के महान संरक्षक, विद्यानुरागी व कलावंत शासक दिए वहीं दूसरी ओर महाराणा सांगा व प्रताप जैसे महान योद्धा व स्वतंत्रता के आदर्श के सर्वस्व उत्सर्ग कर देने वाले वीर उत्पन्न किये। राजस्थान के प्रजावत्सल शासकों के राज्यों की प्रजा के योगदान भी किसी भी दृष्टि से कम नहीं है। इसे यहां की लोक कलाओं, लोकगीतों, कथाओं–कहानियों के माध्यम से देखा जा सकता है।

राजस्थान के रजवाड़ों की लोक परम्पराओं और इतिहास के संकलन का श्रेय कर्नल टॉड को जाता है। उन्होंने अपने वृहद् ग्रन्थ 'एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान' में राजस्थान के इतिहास, वीरता की परम्परा और लोक परम्पराओं को सहेजा है। कालान्तर में राजस्थान के इतिहासकारों ने टॉड के विवरणों की त्रुटियों का परिहार करते हुए एवं नए तथ्यों के प्रकाश में राजस्थान का इतिहास लिखा है। इसी क्रम में गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, दशरथ शर्मा तथा गोपीनाथ शर्मा ने राजस्थान इतिहास के लेखन में अहम् भूमिका निभाई।

प्रस्तुत पुस्तक में दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए नवीन शोधों व उपलब्ध जानकारियों पर आधारित राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति सुगम, सुग्राह्य एवं प्रमाणिक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। आशा है यह पुस्तक विद्यार्थियों के उपयोगी सिद्ध होगी।

संयोजक
प्रोफेसर बी.एम. शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति

विषय कोड–79

पूर्णांक–80

अध्याय–1 : राजस्थान का इतिहास : एक परिचय 18

इतिहास का काल विभाजन, प्रागैतिहासिक राजस्थान (प्राक् युग में राजस्थान), पूर्व पाषाण–काल, मध्य पाषाण–काल, उत्तर (नव) पाषाण–काल, राजस्थान में धातु काल, लौह काल, राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ, कालीबंगा सभ्यता, आहड़ सभ्यता, गिलूण्ड सभ्यता, बागोर सभ्यता, गणेश्वर सभ्यता, अन्य महत्त्वपूर्ण प्राचीन सभ्यताएं, राजस्थान के जनपद, राजपूतों की उत्पत्ति , वैदिक आर्यों की संतान , अग्निकुण्ड से उत्पन्न, ब्राह्मणों से उत्पत्ति का सिद्धांत, विदेशियों की सन्तान, राजस्थान के प्रमुख राजपूत वंशों का परिचय, गुहिल वंश एवं इस वंश के प्रतापी शासक, बप्पा रावल, जैत्रसिंह, रतनसिंह, राणा हम्मीर, महाराणा लाखा, महाराणा मोकल, महाराणा कुंभा, राणा सांगा, राणा उदयसिंह, महाराणा प्रताप, राणा अमरसिंह, महाराणा राजसिंह, मारवाड़ का राठौड़ वंश एवं इस वंश के प्रतापी शासक– राव चूण्डा, राव रणमल, राव जोधा, राव मालदेव, राव चन्द्रसेन, मोटा राजा उदयसिंह, महाराजा जसवंतसिंह प्रथम, बीकानेर का राठौड़ वंश एवं इसके वंश के प्रतापी शासक –राव बीका, राव लूणकर्ण, राव जैतसी, राव कल्याणमल, राव रायसिंह, राव कर्णसिंह, शाकम्भरी का चौहान वंश व इस वंश के प्रतापी शासक– अजयराज, अर्णोराज, विग्रहराज चतुर्थ, पृथ्वीराज तृतीय, संयोगिता–कथा की ऐतिहासिकता, रणथम्भौर का चौहान वंश व इस वंश के प्रतापी शासक, जालोर का चौहान वंश व इस वंश के प्रतापी शासक, आमेर का कच्छवाहा वंश एवं इस वंश के प्रतापी शासक, भगवानदास, मानसिंह, मिर्जा राजा जयसिंह, सवाई जयसिंह, जैसलमेर का भाटी राजवंश एवं इस वंश के प्रतापी शासक, भरतपुर का जाट राजवंश एवं इस वंश के प्रतापी शासक– चूड़ामन, बदन सिंह, महाराज सूरजमल, करौली का यादव वंश, परमार वंश, मराठों का राजस्थान में प्रवेश, बूंदी–उत्तराधिकार संघर्ष , हुरड़ा सम्मेलन, जयपुर का उत्तराधिकार संघर्ष, तूंगा का युद्ध, कृष्णाकुमारी विवाद, जोधपुर का उत्तराधिकार संघर्ष।

अध्याय–2 : राजस्थान के प्रमुख संत एवं लोक देवता 5

लोक देवता – गोगाजी, तेजाजी, पाबूजी, देवनारायणजी, मल्लीनाथजी , रामदेवजी, मेहाजी मांगळिया

संत – धन्ना, पीपा, जांभोजी, लालदास, संत हरिदास, दादूदयाल, मीरा बाई, संत रानाबाई, संत मावजी, रामचरण।

अध्याय–3 : राजस्थान के उत्सव, त्यौहार एवं मेले 5

उत्सव व त्यौहार – गणगौर, तीज, होली, अक्षय तृतीया, मेले– पुष्कर का मेला, जीणमाता का मेला, खाटूश्यामजी का मेला, भर्तृहरि का मेला, डिग्गी के कल्याण का मेला, श्री महावीरजी का मेला, करणी माता का मेला, शीतला माता का मेला, कैलादेवी का मेला, कपिल मुनि का मेला, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का उर्स, अजमेर, गलियाकोट का उर्स, बेणेश्वर का मेला।

अध्याय–4 : राजस्थान के वस्त्र और आभूशण 3

पुरुष परिधान, स्त्री परिधान, राजस्थान के वस्त्र उद्योग की प्रमुख विशेषताएं, आभूषण।

अध्याय–5 : राजस्थानी चित्रकला एवं लोककलाएं 8

चित्रकला, राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएं, राजस्थानी चित्रकला की शैलियों का वर्गीकरण– मेवाड़ शैली,

उदयपुर शैली, नाथद्वारा शैली, देवगढ़ शैली, मारवाड़ शैली, जोधपुर शैली, बीकानेर शैली, किशनगढ़ शैली, अजमेर शैली , हाड़ौती शैली, बूंदी शैली , कोटा शैली, झालावाड़–शैली, ढूंढाड़ शैली, आमेर शैली, जयपुर शैली, अलवर शैली, शेखावाटी के भित्ति चित्र, लोककला– राजस्थान की प्रमुख लोककलाएं, सांझी, मांडणा, फड़, पाने, कावड़, मेहंदी, गोदना, कोठियाँ, वील, कठपुतली।

अध्याय–6 : स्थापत्य एवं षिल्प के विविध आयाम 10

नगर–विन्यास (स्थापत्य) एवं भवन शिल्प,दुर्ग–शिल्प, दुर्गों के प्रकार, राजस्थान के प्रमुख दुर्ग– चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़ (राजसमंद), रणथम्भौर दुर्ग (सवाईमाधोपुर), सिवाणा दुर्ग (बाड़मेर), तारागढ़ का किला (बूंदी), नाहरगढ़ का किला (जयपुर), तारागढ़ (अजमेर), मेहरानगढ़ (जोधपुर), चूरू का किला, अकबर का दुर्ग (अजमेर), लालगढ़ दुर्ग (बीकानेर), भैंसरोड़गढ़ का किला (चित्तौड़गढ़), गागरोण का किला (झालावाड़), जयगढ़ (आमेर), जालोर का किला, जैसलमेर का किला, लोहागढ़, मंदिर शिल्प– एकलिंगजी का मंदिर, उदयपुर, किराडू के मंदिर, बाड़मेर, जगतशिरोमणि मंदिर, आमेर, जैन मंदिर, देलवाड़ा, हर्षतमाता मंदिर, आभानेरी , शिव मंदिर, बाड़ौली, शिव मंदिर, भण्डदेवरा, जैन मंदिर, रणकपुर, सच्चिया माता मंदिर, ओसियां, सास–बहू मंदिर, नागदा, राजप्रासाद एवं महल स्थापत्य , हवेली स्थापत्य, छतरियाँ, मकबरे और दरगाह, जल स्थापत्य।

अध्याय–7 : राजस्थानी संगीत 3

जन–सामान्य के लोक गीत, व्यावसायिक जातियों के लोक गीत।

अध्याय–8 : राजस्थान के लोकनृत्य और लोक नाट्य 5

लोक नृत्य – गेर नृत्य, गींदड़ नृत्य, कच्छी घोड़ी नृत्य, चंग नृत्य, डांडिया नृत्य, अग्नि नृत्य, घुड़ला, ढोल नृत्य, बम नृत्य, घूमर, गरबा, वालर नृत्य, भवाई नृत्य, तेरहताली नृत्य, लोक नाट्य, ख्याल– कुचामनी ख्याल, शेखावाटी ख्याल, जयपुरी ख्याल, हेला ख्याल, कन्हैया ख्याल, तुर्रा कलंगी ख्याल, गवरी, रम्मत, तमाशा, स्वांग, लीला नाट्य, नौटंकी, चारबैंत।

अध्याय–9 : राजस्थानी भाशा और साहित्य 5

राजस्थानी भाषा और बोलियां–राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति एवं विकास– क्षेत्रीय बोलियां – राजस्थानी की प्रमुख बोलियां – मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ौती, मेवाती, वागड़ी, मालवी, शेखावाटी, भीली और अन्य पहाड़ी बोलियाँ – राजस्थानी साहित्य– राजस्थानी साहित्य का इतिहास एवं परंपरा– प्राचीन काल – वीरगाथा काल, पूर्व मध्य काल – भक्ति काल, उत्तर मध्य काल – श्रृंगार, रीति एवं नीति परक काल, आधुनिक काल – विविध विषयों एवं विधाओं से युक्त, राजस्थानी गद्य–पद्य की विशिष्ट शैलियां– ख्यात, वचनिका, दवावैत , वात , झमाल, झूलणा, परची, प्रकास, मरस्या, रासो, रूपक, विगत, वेलि, साखी, सिलोका, आधुनिक राजस्थानी साहित्य, साहित्यिक पत्रकारिता।

अध्याय–10 : राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थल 14

अजमेर – अढ़ाई दिन का झोंपड़ा, ख्वाज़ा साहब की दरगाह, आनासागर झील, मेयो कॉलेज, सोनीजी की नसियां, ब्रह्मा मंदिर, सावित्री मंदिर, पुष्कर सरोवर, अलवर– सरिस्का टाइगर रिजर्व, भानगढ़, मूसी महारानी की छतरी, भर्तृहरि मंदिर, सिलिसेढ़ झील, बांसवाड़ा (सुनहरे द्वीपों का शहर)– माहीबांध, त्रिपुरा सुन्दरी, मानगढ़ धाम, अब्दुल्ला पीर, बारां– सीताबाड़ी, शेरगढ़ किला, रामगढ़ भंडदेवरा मंदिर, बाड़मेर– किराडू मन्दिर, श्री नाकोड़ा जी जैन मन्दिर, रानी भटियानी मन्दिर, भरतपुर– केवलादेव घना राष्ट्रीय उद्यान, लोहागढ़ क़िला, बंध बारेठा, गंगा मंदिर, भीलवाड़ा (वस्त्र नगरी)– मेनाल

जल–प्रपात, मांडलगढ़, शाहपुरा, बूंदी (कुण्ड और बावड़ियों का शहर)– तारागढ़ फोर्ट, चौरासी खम्भों की छतरी, चित्र महल, बून्दी, रानी जी की बावड़ी, चित्तौड़गढ़– चित्तौड़गढ़ किला, विजय स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ, भैंसरोडगढ़ किला, दौसा– चाँद बावड़ी – आभानेरी, हर्षद माता मंदिर – आभानेरी, धौलपुर– वन विहार अभयारण्य, मचकुंड, तालाब–ए–शाही, डूंगरपुर– बेणेश्वर मंदिर, गलियाकोट, गैब सागर झील, हनुमानगढ़– काली बंगा, भटनेर किला, जयपुर (गुलाबी शहर)– हवा महल, आमेर महल, जंतर – मंतर, जयगढ़ फोर्ट, नाहरगढ़ किला, अल्बर्ट हॉल (सेंट्रल म्यूजियम), गलता जी, ईसरलाट (सरगासूली), गोविन्द देव जी मंदिर, जैसलमेर (किले और हवेलियों का शहर)– जैसलमेर का किला, डेजर्ट नेशनल पार्क, पटवों की हवेली, तन्नोट माता मंदिर, रामदेवरा मंदिर, बड़ा बाग, जालोर (ग्रेनाइट की नगरी)– जालोर किला, सुंधा माता मंदिर, मलिक शाह की मस्जिद, झालावाड़– गागरोन का किला, भवानी नाट्यशाला, सूर्य मंदिर, बौद्ध गुफाएं और स्तूप, शेखावाटी (सीकर, झुझुनूं, चुरू), ताल छापर अभयारण्य, मंडावा, खेतड़ी महल, श्रद्धानाथ जी का आश्रम (लक्ष्मणगढ़), हजरत कमरूद्दीन शाह की दरगाह, नवलगढ़, लक्ष्मणगढ़ किला, फतेहपुर, जोधपुर– मेहरानगढ़ किला, जसवंत थड़ा, मण्डोर, कायलाना झील, माचिया सफारी उद्यान, बालसमंद झील, करौली– कैला देवी मन्दिर, श्री महावीर जी मंदिर, मेहंदीपुर बालाजी मंदिर, कोटा– कोटा बैराज, मुकुंदरा बाघ अभयारण्य, जगमंदिर महल, अभेड़ा महल, नागौर– लाडनूं, बड़े पीर साहब दरगाह, झोरड़ा – नागौर, पाली– रणकपुर जैन मंदिर, जवाई बांध, बीकानेर– देशनोक – करणी माता मंदिर, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, जूनागढ़ किला, लालगढ़ पैलेस और म्यूजियम, कोलायत, कतरियासर, राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, राजसमन्द– कुम्भलगढ़ का किला, राजसमन्द झील, हल्दी घाटी, सवाई माधोपुर– रणथम्भौर किला, सिरोही– गुरू शिखर, दिलवाड़ा जैन मन्दिर, नक्की झील, टोंक– बीसलपुर (बांध), सुनहरी कोठी, डिग्गी कल्याण जी मंदिर,श्री गंगानगर (राजस्थान का अन्न भंडार)– बुड़ढ़ा जोहड़ गुरूद्वारा, हिंदुमलकोट सीमा, उदयपुर (झीलों की नगरी)– पिछोला झील, फतेह सागर झील, सहेलियों की बाड़ी, भारतीय लोक कला मंडल, नागदा।

अध्याय–11 : राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 4

निहालचंद, पन्नाधाय, गवरी बाई, दुर्गादास राठौड़, दुरसा आढ़ा, दयालदास, कविराज श्यामलदास, गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, बीरबल सिंह, विजयदान देथा, कन्हैयालाल सेठिया, अल्लाह जिलाई बाई, गवरी देवी, कम्पनी हवलदार मेजर पीरू सिंह, मेजर शैतानसिंह, स्वामी केशवानन्द, पं. झाबरमल शर्मा, आचार्य तुलसी, कोमल कोठारी, कृपालसिंह शेखावत, जगजीत सिंह, पं. विश्वमोहन भट्ट, कर्पूरचन्द कुलिश, डॉ. पी. के. सेठी।

निर्धारित पुस्तक :

राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1	राजस्थान का इतिहास : एक परिचय	1–28
2	राजस्थान के प्रमुख संत एवं लोक देवता	29–37
3	राजस्थान के उत्सव, त्यौहार एवं मेले	38–46
4	राजस्थान के वस्त्र और आभूषण	47–52
5	राजस्थानी चित्रकला एवं लोककलाएं	53–66
6	स्थापत्य एवं शिल्प के विविध आयाम	67–82
7	लोक संगीत	83–87
8	राजस्थान के लोकनृत्य एवं लोक नाट्य	88–95
9	राजस्थानी भाषा और साहित्य	96–103
10	राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थल	104–126
11	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	127–133
	संदर्भ ग्रंथ सूची	134